नियत का आधार

मुहम्मद अज़हर मदनी

अल्लाह के रसूल (पैगम्बर) मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि ''कर्मों का आधार निय्यतों पर है'' (सहीह बुखारी)

हर इन्सान जैसी निय्यत करता है वैसे ही उसका परिणाम होता है। अगर उसका एरादा नेकी का होता है तो इसका परिणाम अच्छा होता है और अगर उसका एरादा बुराई का होता है तो इसका परिणाम भी नकारात्मक होता है। दूसरे शब्दों में यूँ भी कहा जा सकता है अगर किसी इन्सान की निय्यत की बुनियाद अच्छाई पर हो गी तो उसका अमल भी अल्लाह के यहाँ स्वीकार्य हो गा और अगर निय्यत अच्छी नहीं होगी अर्थात बुरी होगी तो उसका कर्म भी बुरा होगा। इस लिये हर इन्सान की निय्यत अच्छी होनी चाहिए। अपने कर्मों का आधार अच्छाई पर रखना चाहिए, उसका हर कर्म नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के बताए गये तरीक़े के मुताबिक होना चाहिए। अल्लाह को एक मानने और उसके रसूल को रसूल मानने का मतलब यही है कि अब वह अल्लाह और रसूल के बताए गये तरीकों के अनुसार जीवन यापन करे, दीनी मसाइल में कुरआन व हदीस को अपना हाकिम बनाए और उसका यह अक़ीदा होना चाहिए कि हमारी ज़िन्दगी की कामयाबी का आधार कुरआन व हदीस है, इसके अलावा इबादत के नाम पर जो कुछ भी अपने जीवन और कर्म में शामिल करेगा वह अकारत जाए गा।

नेकी में अल्लाह की खुश्नूदी और उसकी सामीप्ता की निय्यत होनी चाहिए, उसका नेक कर्म दिखावे से बिलकुल पवित्र हो, जो कुछ भी नेक अमल करे अल्लाह के लिये करे और उसका यह अक़ीदा हो कि वह जो कुछ भी कर रहा है आखिरत में कामयाबी के लिये कर रहा है और अल्लाह और उसके रसूल के आज्ञापालन में कर रहा है, और इन्सान की यह निय्यत हो तो उसके कर्म अल्लाह के यहाँ स्वीकार्य होंगे। और उसकी निय्यत के मुताबिक अल्लाह के यहाँ उसको बदला दिया जाए गा। कुरआन में एक जगह अल्लाह तआला फरमाता हैः दुनिया की चाहत वालों को हम कुछ दुनिया दे देते हैं और आख़िरत का सवाब चाहने वालों को हम वह भी देंगे और एहसान मानने वालों को हम बहुत जल्द नेक बदला देंगे'' (सूरे आले इमरान-१४५)

कहा जाता है कि जैसी निय्यत वैसी बरकत, इस लिये कर्मों के बारे में हमें हमेशा सावधान रहना चाहिए हमारी निय्यत अच्छी हो तो हमें अच्छा बदला मिलेगा और अगर हमारी निय्यत अच्छी नहीं होगी तो इसका अंजाम विपरीत होगा। अल्लाह तआला से दुआ है कि वह हमें हर वक़्त अच्छा कर्म करने और अच्छे विचार रखने की क्षमता दे और बुरे कर्मों और विचारों से सुरक्षित रखे। (आमीन)

मासिक

इसलाहे समाज

जुलाई 2022 वर्ष 33 अंक 07

जुलहिज्जा 1443 हिजरी

संरक्षक

असग़र अ़ली 'सलफ़ी'

संपादक

मुहम्मद ताहिर

❑ वार्षिक राशि 100 रुपये

❑ प्रति कापी 10 रुपये

सम्पर्क

मासिक इसलाहे समाज (हिन्दी)

4116, उर्दू बाज़ार, जामा मस्जिद

दिल्ली-110006

फोन : 23273407 फ़ैक्स: 23246613

RNI No. 53452/90

मुद्रक एवं प्रकाशक मुहम्मद इरफान शाकिर ने मर्कज़ी जमीअत अहले हदीस हिन्द की ओर से एम.एस. प्रिन्टर्स, A-145 गली न० 8 चौहान बांगर, सीलमपुर, दिल्ली-53 से छपवा कर अहले हदीस मंज़िल 4116, उर्दू बाज़ार, जामा मस्जिद दिल्ली-6 से प्रकाशित किया।

सम्पादक: मुहम्मद ताहिर

लेखक के विचारों से संस्था का सहमत होना आवश्यक नहीं है।

इस अंक में

1. निय्यत का आधार 2
2. अफवाह का नुक्सान 4
3. ईशदौत्य की पवित्रता 5
4. पैगम्बर मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम प्रसिद्ध बुद्धजीवियों की नज़र में 7
5. मरने के बाद और क़्यामत से पहले की ज़िन्दगी 9
6. इस्लाम की खूबियाँ 11
7. प्यारे रसूल की प्यारी बातें 14
8. परिणय सूत्र इस्लाम की दृष्टि में 15
9. प्रेस रिलीज़ (कार्य समिति) 17
10. उदयपुर में हुई निर्मम हत्या निन्दनीय 22
11. चांद नज़र आया 22
12. मानव अधिकार 23
13. डा० अब्दुल अली अज़हरी का निधन 23
14. अपील 27
14. अहले हदीस मंज़िल (विज्ञापन) 28

ईमेल:-

Jaridahtarjuman@gmail.com

Jamiatahlehadeeshind@hotmail.com

अब 'इसलाहे समाज' इन्टरनेट पर भी उपलब्ध है

वेब साइट:- www.ahlehadees.org

अफवाह का नुक्सान

नौशाद अहमद

कहा जाता है कि एक गलत फहमी सैकड़ों बुराइयों को जनम देती है और इसका अंजाम हमेशा बुरा ही होता है। शोध और रिसर्च गलत फहमी का अंत करते हैं और यही किसी भी भ्रांति का ठोस एलाज होता है, लेकिन अब ऐसा जेहन बनता जा रहा है कि लोग एक निराधार खबर पर बड़ी आसानी से विश्वास कर लेते हैं जबकि किसी भी खबर पर सुनते ही या पढ़ते ही विश्वास कर लेना या टिप्पणी करना किसी भी तरह से उचित नहीं है।

अगर शोध और छान बीन के सिलसिले में किसी की निय्यत साफ हो तो वह अपनी असली मंज़िल (गंतव्य) तक पहुँच जाता है लेकिन अगर मामला इसके विपरीत हो तो एक झूठी खबर या अफवाह से अनेकों समस्याएं उत्पन्न हो जाती हैं।

किसी भी समाज या समुदाय के हर कर्म को उसके धर्म का भाग समझना ठीक नहीं है, आम तौर से होता यही है कि लोग किसी के निजी गलत कर्म को उसके धर्म का हिस्सा समझ लेते हैं यहीं से समस्याएं और भ्रांतियां पैदा होनी शुरू हो जाती हैं। और इस तरह की स्थिति पैदा करने वाले वह लोग होते हैं जो अपना स्वार्थ साधना चाहते हैं। यही वजह है कि आज संसार में जहाँ कहीं पर उलझन और टकराव है उसमें सबसे ज़्यादा दखल स्वार्थ अफवाह और भ्रांतियों का है। इस्लाम धर्म हर किसी को इन खराबियों से दूर रहने का उपदेश और आदेश देता है इसलिये किसी के निजी गलत कर्म को उसके धर्म और पूरे समुदाय से जोड़ना सरासर अन्याय और अनुचित है।

भ्रांति और गलत फहमी फैलाने और गलत प्रोपैगण्डा पाश्चात्य देशों की तरफ से विश्व स्तर पर किया गया, इसकी आड़ में एक विशेष धर्म के मानने वालों और उनके धर्म को लक्ष्य बनाया गया, वह प्रोपैगण्डा और निराधार बातें आज विश्व स्तर पर फैल गई है; लेकिन दुर्भाग्य की बात है कि एक बड़ा वर्ग पश्चात्य देशों के प्रौपैगण्डे का शिकार हो गया जब कि इस्लाम और मुसलमानों का मामला इसके विपरीत है। इस्लाम दूसरों के धर्म की शिक्षाओं और उनके धर्म गुरूओं के सम्मान का आदेश देने के साथ निराधारा बातों और खबरों से दूर रहने का हुक्म देता है। पवित्र कुरआन में स्पष्ट शब्दों में कहा गया है :

"ऐ मुसलमानो! अगर तुम्हें कोई फासिक़ खबर दे तो तुम उसकी अच्छी तरह से तहकीक (क्षानबीन) कर लिया करो। ऐसा न हो कि नादानी (आज्ञानता) में किसी कौम को ईज़ा (दुख) पहुचां दो फिर अपने किये पर पशेमानी उठाओ। (सूरे हुजुरात-६)

ऐसा अधिकांश तौर पर होता है कि कुछ लोग अपनी कमियों को छिपाने के लिये दूसरों के धर्म की शिक्षाओं को तोड़ मरोड़ कर और गलत अन्दाज़ में पेश करते हैं हमें ऐसे लोगों से सचेत रहने के साथ अपनी अकल का भी स्तेमाल करने की ज़रूरत है। प्यार मुहब्बत और आपसी विश्वास किसी भी समाज के लिये रीढ़ की हडडी हैं अगर इसमें दराड़ पैदा हो जाये तो फिर समाज गलत दिशा में चला जाता है और यह काम गलत फहमी पैदा करके किया जाता है जिससे हमें बचाव, सचेत रहने और गलत फहमी को दूर करने की ज़रूरत है।

❑ ❑ ❑

ईशदौत्य की पवित्रता और हमारी ज़िम्मेदारियाँ

मौलाना खुर्शीद आलम मदनी, पटना

पश्चिम (पाश्चात्य देश) जो स्वयं को सभ्यता का झण्डा वाहक समझता है लेकिन उसका लिबरल कलचर मानवता के माथे पर बदनुमा दाग़ है। इसके विभिन्न देशों में कुछ ऐसे संगठन और दल हैं जो मुसलमानों की धार्मिक एवं आध्यात्मिक हस्तियों के साथ दुष्टता करते हैं, बुरे कारटूनों और दुष्टतापूर्ण कारटूनों के माध्यम से उनका उपहास उड़ाते हैं जिससे मुसलमानों का दिल आहत होता है और उन्हें हार्दिक दुख और आध यात्मिक सदमा पहुंचता है और जब उनके इस कुकर्म के विरूद्ध आवाज़ें बुलन्द की जाती हैं तो पूरी पाश्चात्य दुनिया का एक ही जवाब होता है कि यह निजी राय, मानव अधिकार का मामला है हर व्यक्ति को अभिव्यक्ति की आज़ादी है और कोई काम अपनी सोच के अनुसार कर सकता है। यह हक़ीक़त है कि इन कारटूनिस्टों में से बहुत सारे ईश्वर के प्रकोप के शिकार भी हुए दुनिया वालों के लिये लाभप्रद के प्रतीक भी बन गये और दुनिया वालों ने उनके बुरे अंजाम को अपनी आंखों से देखा लेकिन इसके बावजूद यह शैतानी खेल खेला जा रहा है और गैर इन्सानी (अमानवीय) सिलसिला अभी तक जारी है।

इसकी एक बड़ी वजह यह भी है कि आज इस्लाम पाश्चात्य देशों में बड़ी तेज़ी से फैल रहा है। हज़ार रूकावटों, चैलेन्जों के बावजूद इस्लाम का प्रचार व प्रसार हो रहा है और लोग घिसी पिटी व्यवस्था से तंग आ कर इस्लाम को गले लगा रहे हैं इन में अधिकांश संख्या उन शिक्षित नारियों की है जिनके सामने इस्लाम के खिलाफ यह प्रोपैगण्डा किया जा रहा है कि इस्लाम ने औरतों के अधि ाकारों का हनन किया है और उनकी आज़ादी छीन ली है। इस्लाम दुश्मन संगठित ढंग से पूरी दुनिया में मुसलमानों को कमज़ोर करने और दुनिया को इस्लाम से दूर करने के लिये प्रयासरत हैं, सहयूनी मीडिया इस्लाम को पश्चिमी दुनिया में एक खतरे के तौर पर परिचित करा रहे हैं। मुसलमानों पर आतंकवाद का आरोप लगा रहे हैं और यह आवाज़ लगा रहे हैं कि मुसलमानों की बढ़ती हुई तादाद पूरी दुनिया के लिये विशेष रूप से पाश्चात्य संसार के लिये एक बड़ा खतरा है और इसी खतरे को खतम करने और दबाने के लिये वह ओछी हरकतें कर रहे हैं, कभी पवित्र कुरआन को जलाते हैं, कभी हमारे प्यारे रसूल (पैगम्बर) मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की शान में दुष्टतापूर्ण कारटून बनाते हैं और उन्हें एक आतंकवादी, आक्रामक और अत्याचारी के रूप में दुनिया वालों के सामने पेश करते हैं।

आज इस्लाम और इस्लाम के पैगम्बर सबसे ज़्यादा मज़लूम हैं और जालिम का मक़सद यह है कि इस तरह पैगम्बर का अपमान और ईशदौत्य के पवित्रतता पर हमला करके मुसलमानों के दिलों से ईमानी गैरत को खतम कर दिया जाए लेकिन मुसलमान किसी हाल में भी यह

गवारा नहीं कर सकता कि ईशदौत्य की पवित्रता पर किसी प्रकार की आंच आए और यही दुनिया में जीवित कौमों का सिद्धांत है कि वह अपने बुनियादी ईमान व आस्था की हिफाज़त करती हैं। उनका यह ईमान है कि अल्लाह की नज़रों में कोई शख्स वास्तविक मोमिन नहीं हो सकता जब तक वह अपनी जान, अपने मां बाप, अपनी औलाद और दुनिया की हर वस्तु से ज़्यादा पैगम्बर से मुहब्बत न करे।

आज यह कितने खेद की बात है कि इस पवित्र हस्ती की छवि एवं आचरण को बिगाड़ने की कोशिश की जा रही है। बुरे कारटून प्रकाशित करने और उनका प्रतियोगिता कराने का एलान किया जाता है जिस पर आस्मान में अल्लाह और फरिश्ते दरूद भेजते हें और जमीन में तमाम मुसलमान दरूद भेजते हैं जिसे पेड़ और पत्थरों ने सलाम किया और जिसके एशारे ने चांद को दो टुकड़े कर दिया। जिसने अपनी पूरी ज़िन्दगी में झूठ नहीं बोला, न किसी को गाली दी और न किसी का दिल दुखाया। एक बार फिर हॉलैण्ड की संसद के एक सदस्य और फिरीडम पार्टी के प्रमुख गियर्ट विलडर्स ने रसूल की पवित्रता पर हमलाआवर होने का दुस्साहस किया। उसने हॉलैण्ड की संसद में दुष्टतापूर्ण कारटून की प्रतियोगिता करवाने का एलान किया है। बाद में विलडर्स ने अपने इस ऐलान को निरस्त कर दिया। पवित्र कुरआन का अपमान, ईशनिन्दा और इस्लाम की सहीह छवि को बिगाड़ने का यह खेल चलता रहेगा। इस्लाम के दीप को बुसझाने के लिये इस तरह का निन्दित कृत्य जारी रहेगा।

ऐसे अवसर पर हमें जजबात के सैलाब में बहने के बजाये इस्लाम को मजबूती से थामने और रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के अधिकारों के संरक्षण पर पूरा ध्यान देना चाहिए। हम अपनी कथनी एवं करनी से संसार को यह सन्देश दें कि इस्लाम दया करूणा वाला धर्म और कुरआन दया एवं करूणा का सन्देश है। हम अपने अन्दर नेक जजबा पैदा करें कि मुसलमान बन कर जिन्दगी गुजारेंगे। सूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की शिक्षाओं पर अमल हमारी ज़िन्दगी की विशिष्ट शान होगी, उनकी किसी सुन्नत को हम छोटी नहीं समझेंगे।

पैगम्बर मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की शिक्षाओं को सीखने, दूसरों को सिखाने और फैलाने में अपनी पूरी ऊर्जा लगा देंगे। ज़्यादा से ज़्यादा इस नबी पर दरूद सलाम भेजेंगे, इससे अल्लाह की दया नाज़िल (अवतरित) हो गी, हमारे पाप झड़ें गे साथ ही अपनी सफों में एकता स्थापित करेंगे, इस्लामी भाई चारा को बढ़ावा देंगे, रसूल से मुहब्बत के आधार पर एकता का प्रदर्शन करेंगे और अपने पड़ोस में आबाद गैर मुस्लिम भाइयों के साथ अच्छा व्यवहार और मानवता का मामला करेंगे। फिर हालात बदलेंगे अम्न व शान्ति का वातावरण होगा।

और हमारे दरजात बुलन्द होंगे। अल्लाह तआला हमारे दिलों में दीनी व ईमानी गैरत पैदा कर दे और रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के तईं अपनी जिम्मेदारियों को महसूस करने ओर उनकी पवित्र जीवनी को साधारण करने की क्षमता दे। आमीन

❑ ❑ ❑

पैगम्बर मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम प्रसिद्ध बुद्धजीवियों की नज़र में

अबू अदनान सनाबिली

इस लेख में संसार के सुप्रसिद्ध हस्तियों के कथन बयान किये जा रहे हैं जिन का सबन्ध जीवन के विभिन्न प्रभाग से है, कोई वक़्त का बहुत बड़ा शासक है, कोई प्रख्यात साहित्यकार है, कोई दुनिया का सबसे बड़ा दार्शिनिक है कोई बहुत बड़ा बुद्धजीवी है लेकिन सबने पैगम्बर मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की प्रशंसा की है बल्कि आप की तरफ से दिफा भी किया है। इन महान गैर मुस्लिम हस्तियों के कथनों के उल्लेख का मकसद यह भी है कि हम देखें कि अल्लाह के रसूल (पैगम्बर) मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की खूबियों को किस तरह गैरों ने भी स्वीकार किया है।

सुप्रसिद्ध हिन्दी कवि जगन नाथ ने क्या खूब कहा हैः

मुझे इक मुहसिने इन्सानियत का ज़िक्र करना है

मुझे रंगे अक़ीदत फिक्र के सांचे में भरना है

बयां करना है औजे इब्ने आदम बन के कौन आया

बयां करना है फखरे हर दो आलम बन के कौन आया

जिसे हक़ ने किया तस्लीम खत्मुल मुरसलीं आया

जिसे दुनिया ने माना रहमतुल लिलआलमीन आया

ख़लीक आया करीम आया रऊफ या रहीम आया

कहा कुरआन ने जिस को साहिबे खुलके अजीम आया

आप की पवित्र जीवनी का यह कमाल है कि आप के बदतरीन दुश्मनों ने आप को उच्च नैतिकता का वाहक इन्सान क़रार दिया। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का अबू जहल से बढ कर दुश्मन कौन था? मगर अबू जहल भी खुले तौर पर कहता था ''हम तुझे झूठा नहीं कहते बल्कि उस शिक्षा को झुठलाते हैं जो तू ले कर आया है''

मशहूर अमरीकी लेखक फलकियात (खगोल शास्त्र) का माहिर और इतिहासकार माइकल एच हार्ट अपनी किताब ''सौ महान हास्तियाँ'' में सबसे पहले मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का उल्लेख करते हुए लिखाः

''संभव है कि अत्यंत प्रभावी हस्तियों में सबसे पहले मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का उल्लेख करने पर कुछ लोग आश्चर्य चकित हों, कुछ आपत्ति करें लेकिन यह पहले इतिहासिक हस्ती हैं जो कि धार्मिक और सांसारिक दोनों मैदोनों पर समान रूप से सफल रहे।''

प्रसिद्ध जर्मन कवि गोयटे मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की प्रशंसा करते हुए कहता हैः

''वह (मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम) एक पैगम्बर हैं, कवि नहीं, अतः इनके कुरआन को अल्लाह के एक कानून के तौर पर देखा जाना चाहिए न कि किसी

इन्सान की किताब के रूप में, जो शिक्षा या मनोरंजन के लिये बनाया गया है।''

इंगलैण्ड के मश्हूर नाटककार और दार्शनिक जार्ज बरनारड्शा लिखते हैंः

''मेरा विश्वास है कि अगर मुहम्मद (सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम) जैसे शख्स को आधुनिक दुनिया की डिकटेटरशिप हुकूमत सौंप दी जाए तो वह इस संसार की समस्याएं इस तरह से हल करेगा कि दुनिया वास्तविक खुशियों और राहतों से भर जाए गी। मैंने उन्हें पढ़ा है वह किसी भी तरह के छल व धोके से कोसों दूर हैं उन्हें निश्चित रूप से मानवता का मुक्तिदाता कहा जा सकता है। मैंने भविष्यवाणी की थी कि मुहम्मद (सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम) की आस्था यूरप के लिये आने वाले कल में उतनी ही स्वीकार्य होगी कि जितना आज स्वीकार्य बनने लगी है।''

रूस के प्रसिद्ध विचारक लियो टॉलिस्टाई लिखते हैंः मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम हमेशा ईसाइयत से बुलन्द रहे हैं वह खुदा को इन्सान नहीं समझते थे और न कभी अपने आप को खुदा के बराबर करार देते हैं। मुसलमान अल्लाह के सिवा किसी की इबादत नहीं करते और मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम उसके रसूल हैं, यह कोई ढकी छिपी बात नहीं है।''

राष्ट्रपिता महात्मागांधी जी आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को यूं श्रद्धांजलि पेश करते हैंः

''मेरा इस पर विश्वास पहले से बढ़ चुका है कि यह तलवार नहीं थी जिस के ज़रिये इस्लाम ने अपना स्थान हासिल किया बल्कि एक गैर लचकदार सादगी, इस्लाम के पैगम्बर की नफ्स कुशी, अपने वादों का सम्मान, अपने मित्रों और अनुयाइयों के लिये अत्यंत श्रेणी का लगाव, उनकी बहादुरी और निडरता, और अपने खुदा और अपने मिशन पर स्थिरता और ईमान ने उन्हें सफलता दिलाई और इसी से उन्होंने हर मुश्किल पर काबू पाया''

फ्रांस के दार्शनिक लामारटीन ''हिस्टरी आफ टुर्की'' में लिखता हैः

''अगर किसी व्यक्ति की योग्यता को परखने के लिये तीन स्तर निध ार्रित किये जाएं कि इस व्यक्ति का मकसद कितना महान है उसके पास संसाधन कितने सीमित हैं और उसके परिणाम कितने भव्य हैं तो आज कौन ऐसा व्यक्ति मिलेगा जो मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से तुलना करने का साहस करे....'' मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने न केवल दुनिया की फौजों, कानून, सरकारों, विभिन्न कौमों और नस्लों बल्कि दुनिया की कुल आबादी के एक तिहाई को एकटठा कर दिया.. ....'' मानवीय महानता को परखने की कोई कसौटी निर्धारित कर लें, क्या मुहम्मद (सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम) से बढ़ कर कभी कोई शख्स पैदा हुआ?''

कवि पंडित हरिचन्द अखतर ने आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की यूं प्रशंसा की हैः

किस ने ज़र्रों को उठाया और सहरा कर दिया

किसने कतरों को मिलाया और दर्या कर दिया

किस की हिकमत ने किया यतीमों को दुर्रे यतीम

और गुलामों को ज़माने भर का मौला कर दिया

(बाक़ी पृष्ठ २१ पर)

मरने के बाद और क्यामत से पहले की ज़िन्दगी

मौलाना अजीज अहमद मदनी

परोक्ष की बातों पर ईमान लाना और अक़ीदा रखना हमारे ईमान का एक भाग है। परोक्ष के मामलों का मतलब यह है जिन को जानना अक़्ल और एहसास से संभव नहीं, जैसे कि अल्लाह की जात, अल्लाह की तरफ से वह्य, फरिश्ते, स्वर्ग व नरक, कब्र का अज़ाब और दोबारा जीवित किये जाने की बात। इन तमाम चीज़ों के बारे में अल्लाह और उसके रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने जो कुछ हमें बताई हैं इन पर विश्वास करना ईमान का भाग है।

इन्हीं परोक्ष की बातों में से एक बरज़ख की ज़िन्दगी है। दुनिया की ज़िन्दगी और आखिरत से पहले की ज़िन्दगी के बीच जो गेप है इसे बरज़ख की ज़िन्दगी कहा जाता है क्योंकि मरने के बाद इन्सान का संबन्ध दुनिया की ज़िन्दगी से टूट जाता है आखिरत की ज़िन्दगी की शुरूआत उस वक़्त होगी जब तमाम इन्सान दोबारा जीवित किये जायेंगे। यह दर्मियान की ज़िन्दगी बरज़ख़ की ज़िन्दगी है इस चरण से हर इन्सान को गुज़रना है चाहे वह नेक हो या बुरा। इसी बरज़ख की ज़िन्दगी में कब्र के अज़ाब या उसकी नेमतों से लाभान्वित होने और मुनकर नकीर के सवालों का सामना करना है जिससे किसी को छुटकारा नहीं है। मुनकर नकीर के सवालात में जो कामयाब हुआ उसकी कब्र उसके लिये जन्नत और जो नाकाम हुआ उसकी कब्र उसके लिये जहन्नम जैसी बना दी जाएगी जैसा कि हदीसों में इसकी दलीलें मौजूद हैं। सारांश यह है कि कब्र का चरण बड़ा महत्वपूर्ण और कठिन है जैसा कि तिर्मिज़ी की रिवायत में बयान किया गया है। तीसरे खलीफा उसमान बिन अफ्फान रज़ियल्लाहो तआला अन्हो जब कब्र के पास खड़े होते तो इतना रोते कि आप की दाढ़ी भीग जाती थी, इनसे वजह पूछी गई तो फरमाया कि मैंने अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से फरमाते हुए सुना है कि कब्र आखिरत की मंजिलों (चरणों) में से पहला चरण है। इन्सान अगर इस चरण से निजात पा गया तो इसके बाद के चरण उसके लिये आसान होंगे और अगर निजात न पा सका तो इसके बाद के चरण इसके लिये सख्त तरीन होंगे। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने यह भी फरमायाः कब्र से ज़्यादा भयावह दृष्य हमने कभी नहीं देखा'' (तिर्मिजी २३०८)

कब्र की ज़िन्दगी को बरज़ख इस लिये कहते हैं कि वह दुनिया की ज़िन्दगी और आखिरत की ज़िन्दगी के दमिर्यान एक आड़ और परदा है। बरज़ख में रहने वाले की गिनती न तो दुनिया में रहने वाले के साथ की जा सकती है और न आख़िरत में रहने वाले के साथ। इमाम शाबी रह० के सामने एक व्यक्ति का उल्लेख किया गया जो वफात पा गया था कहने वाले ने यूं कहाः ऐ अल्लाह फलां शख्स पर दया कर, वह अब आखिरत वालों में से हो गया इस पर इमाम शाबी ने कहा, नहीं वह आख़िरत वालों में से नहीं बल्कि वह बरज़ख वालों में से है वह अब न

दुनिया में है और न आख़िरत में। (तफसीर कुर्तबी ७/१०४)

अल्लाह तआला ने बरज़ख का उल्लेख तीन जगहों पर किया है सूरे मोमिनून, सूरे फुरकान और सूरे रहमान में। हदीस की किताबों में बरज़ख का शब्द तो नहीं मिलता लेकिन कब्र, कब्र का अज़ाब, कब्र की नेमत और मुनकर नकीर के सवालात से संबन्धित अनेकों हदीसें मौजूद हैं जो कब्र और बरज़ख को साबित करने और उसकी स्थिति पर ईमान के लिये काफी हैं इन में कुछ हदीसें पेश की जा रही हैं।

आइशा रज़ियल्लाहो तआला अन्हा बयान करती हैं कि एक यहूदी औरत मेरे पास आई और बात चीत के दौरान उसने कहा कि अल्लाह तआला तुम्हें कब्र के अज़ाब से सुरक्षित रखे। मुझे इस औरत की बात पर आश्चर्य हुआ और मैंने आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के सामने यह वाकआ बयान किया आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमायाः इस यहूदी औरत ने झूठ बोला है मगर चन्द दिनों के बाद आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने खुतबा दिया और फरमाया कब्र के अज़ाब से पनाह मांगा करो, बेशक कब्र का अज़ाब सत्य है।

जैद बिन साबित रज़ियल्लाहो तआला अन्हो बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमायाः यह कब्र वाले अपने कबरों में आजमाइश में लिप्त हैं अगर बात ऐसी न होती कि तुम अपने मुर्दों को दफनाना बन्द कर दो गे तो मैं अल्लाह से दुआ करता कि वह तुम्हें कब्र के इस अज़ाब को सुना देता जिसे मैं सुन रहा हूं। (सहीह मुस्लिम २८६७)

उस्मान बिन अफ्फान रज़ियल्लाहो तआला अन्हो बयान करते हैं कि नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम मुर्दे को दफन करने के बाद ठेहरते और कहतेः

''अपने भाई के लिये बख्शिश (क्षमायाचना) की दुआ और उसकी साबित कदमी के लिये अल्लाह से दुआ करो क्योंकि अभी इस से सवाल जवाब होगा। (अबू दाऊद)

बरा बिन आज़िब रज़ियल्लाहो तआला अन्हो बयान करते हैं कि नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमायाः मुसलमान से जब कब्र में सवाल किया जाता है तो वह लाइलाहा इल्लल्लाहो मुहम्मदुर रसूलुल्लाहा की गवाही देता है।

अबू सईद खुदरी रज़ियल्लाहो तआला अन्हो बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमायाः अल्लाह तआला काफ़िर पर उसकी कब्र में निन्नानवे खतरनाक जहरीले अज़दहे लगा देगा जो उसे डसेंगे काट खाएंगे यह सिलसिला क्यामत तक जारी रहेगा। इन में से एक अज़दहा अगर ज़मीन की तरफ फूंक मार दे ज़मीन के सबज़ाज़ार (हरे भरे पेड़ पौदे) भस्म हो जाएं। अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ियल्लाहो तआला अन्हुमा बयान फरमाते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि जब तुम में से कोई शख्स मर जाता है तो कब्र में उसके सामने सुबह शाम उसकी जगह पेश की जाती है अर्थात अगर वह जन्नती है तो जन्नत और जहन्नमी है तो जहन्नम उसके सामने पेश की जाती है और कहा जाता है कि यह तेरी असल जगह है जहां क़यामत वाले दिन अल्लाह तआला तुझे भेजेगा। (सहीह बुखारी, सहीह मुस्लिम)

(बाक़ी पृष्ठ २१ पर)

इस्लाम की खूबियां

सईदुर्रहमान सनाबिली

क्रय-विक्रय में नर्मी

इस्लाम की नज़र में तिजारत एक काबिले क़द्र पेशा है शर्त यह है कि इस्लाम ने हमें तिजारत के जो नियम और सिद्धांत बताये हैं उनका ख्याल रखा जाये। व्यापार करते वक्त व्यवपारियों और व्यापार से जुड़े लोगों के साथ नर्मी पर बल दिया गया है ताकि मोहताजों और गरीबों की आवश्यकताएं पूरी हो सकें। जाबिर बिन अब्दुल्लाह रजिअल्लाहो अन्हुमा बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमायाः अल्लाह ने एक शख्स को बख्श दिया जो तुम से पहले था जो बेचने, खरीदने और तकाज़ा करते वक़्त नर्मी किया करता था (सुनन तिर्मिज़ी १३२०, सुनन इब्ने माजा २२०३, यह हदीस सहीह है, देखिए सहीहुल जामे-४१६२)

उस्मान बिन अफ्फान रजिअल्लाहो तआला अन्हो बयान करते हैं कि मैंने अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को फरमाते हुये सुना एक शख्स था जो बेचते खरीदते, तकाज़ा करते वक्त नर्मी किया करता था अल्लाह ने इस अच्छी आदत की वजह से उसे स्वर्ग में दाखिल कर दिया। (मुसनद अहमद, ४१०, सुनन नेसई ४६६६, सुनन इब्ने माजा २२०२, शैख अल्बानी ने इस रिवायत को हसन करार दिया है देखिये सहीहुल जामे २४०, सहीहुल तरगीब वत तरहीब १७४३)

परेशान हाल को मोहलत दी जाये मानव समाज का पहिया आपसी सहयोग के बिना चल पाना असंभव है। आपसी मामलात के वक्त लोगों की हालतों का ख्याल रखते हुये उन्हें मोहलत देना और अपने हक़ की मांग करने में नर्मी और खुश दिली का प्रदर्शन करने से बहुत ज्यादा सवाब मिलता है। हुजैफ़ा बिन यमान रजिअल्लाहो तआला अन्हो बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमायाः एक शख्स मरने के बाद जन्नत में दाखिल हुआ उससे पूछा गया कि तुम कौन सा कर्म किया करते थे उसको स्वयं याद आ गया या उसे याद दिलाया गया उसने कहाः मैं लोगों से माल बेचा करता था और मेरा तरीका यह था कि मैं तंगदस्तों (परेशान हाल) लोगों को मोहलत दिया करता था और थैले और नकद में मौजूद कमी को नजर अन्दाज करता था (सहीह मुस्लिम १५६०)

यतीम का भरण-पोषण

इस्लाम धर्म ने ज़रूरत मन्दों और मोहताजों के साथ मुहब्बत और दया को सम्मान की निगाह से देखता है और उस बच्चे से

ज्यादा ज़रूरत मन्द और मोहताज कौन हो सकता है जिसके बचपन में ही उसके मां बाप या केवल उसके पिता का निधन हो जाये ऐसे बच्चे का भरण पोषण (किफालत, देख भाल) को इस्लाम धर्म प्रशंसनीय काम करार देता है बल्कि ऐसे लोगों के बारे में हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने शुभ सूचना दी है कि ऐसा शख्स जन्नत में आपके बिल्कुल करीब होगा।

सहल बिन सअ्द रजिअल्लाहो तआला अन्हो बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया मैं और यतीम अनाथ की किफालत व भरण पोषण करने वाले जन्नत में यूं होंगे, यह कहते हुये अल्लाह के रसूल हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने अपनी दो उंगलियों से संकेत किया। (सहीह बुखारी १४६७)

बीमार की अयादत बीमार का हाल चाल मालूम करना (इयादत) करना बहुत पुण्य का काम है। हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमायाः जो मरीज की इयादत करने के लिये जाता है वह लौटने के वक्त तक जन्नत के बाग में रहता है। (सहीह मुस्लिम २५६८)

अबू हुरैरह रजिअल्लाहो तआला अन्हो बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया जिसने अल्लाह के लिये किसी मरीज या अपने किसी भाई की इयादत की तो अल्लाह की तरफ से पुकारने वाला पुकारता है कि तुमने बहुत ही अच्छा काम किया है और तेरा चलना अत्यंत मुबारक रहा और तुझे इस की वजह से जन्नत में जगह दी गयी है (सुनन तिर्मिज़ी २००८ इसे शैख अलबानी ने हसन करार दिया है)

अरब के वासी बेटियों और बहनों को अपने लिये हतक समझा करते थे और उनके साथ गलत रवैया अपनाया करते थे उन्हें जिन्दा दफन कर देते थे लेकिन इस्लाम ने अपने आने के पहले ही दिन से नारी को सम्मान दिया और मां, बहन, बेटी, खाला, फूफी, चाची, दादी, नानी तमाम हैसियतों में नारी को पूर्ण सम्मान दिया। अबू सईद खुदरी रजिअल्लाहो तआला अन्हो का बयान है अल्लाह के रसूल हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया जिसके भी तीन बेटियां हों या तीन बहनें हों या दो बेटियां और दो बहनें हों और वह उनका भली भांति (अच्छी तरह) से पालन पोषण करे और उनके बारे में अल्लाह से भय करे तो अल्लाह तआला उसे जन्नत में दाखिल करेगा। (सुनन तिर्मिज़ी १८३५, अलअद्बुल मुफरद-७९, शैख अलबानी ने इसे सहीहा ४७५२ में सहीह करार दिया है) इन्सान के लिये मां बाप अकीदत और सम्मान का केन्द्र होते हैं क्योंकि यह मां बाप ही हैं जो उसके वजूद का सबब बनते हैं और हर तरह के दुख को बर्दाश्त करने के बाद उसका पालान पोषण करते हैं। यही वजह है कि इस्लाम धर्म ने माता पिता

को सम्माननीय करार दिया है और उनके साथ अच्छा व्यवहार करने वाले इन्सान को जन्नत में जाने की खुशखबरी सुनायी है। हज़रत अबू हुरैरह रजिअल्लाहो तआला अन्हो बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया उस शख्स की नाक धूल धूसरित हो, उस शख्स की नाक धूल धूसरित हो जो अपने मां बाप या उनमें से किसी एक को बुढ़ापे में पा ले और फिर भी वह जन्नत में दाखिल न हो सके। (सहीह मुस्लिम २५५१)

जानवरों के साथ अच्छा बर्ताव अबू हुरैरह रजिअल्लाहो तआला अन्हो का बयान है कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया एक आदमी ने एक कुत्ते को प्यास की वजह से मिटटी चाटते देखा तो उसने अपना मोज़ा लिया और उसे भिगोकर पिलाने लगा यहां तक कि कुत्ता सैराब हो गया अल्लाह ने इस शख्स के कर्म को कुबूल कर लिया और उसे जन्नत में दाखिल कर दिया। (सहीह बुखारी १७, सहीह मुस्मिल २२४४)

पाठक गण ध्यान दें

1-जल्द से जल्द बकाया राशि भेज दें। 2-अगर आपको हर महीने की 5 तारीख को पत्रिका न मिले तो इसके बारे में कार्यालय को सूचित करें। न मिलने की सूरत में दूसरी कापी भेजी जायेगी, लेकिन शिकायत करने से पहले अपने नजदीकी डाकखाने पर जानकारी हासिल कर लें। 3-नये खरीदारों से अनुरोध है कि अपने पते में फोन नम्बर अथवा मोबाइल नम्बर और पिन कोड भी लिखें। 4-पुराने खरीदारों से अपील की जाती है कि यदि उनका कोई फोन नम्बर या मोबाइल नम्बर हो तो पोस्ट कार्ड पर या फोन के जरिये अपने खरीदारी नम्बर का हवाला देकर अवश्य भेज दें ताकि जरूरत पड़ने पर उनसे सम्पर्क किय जा सके। 5- मनी आर्डर या हमारे प्रतिनिधियों के माध यम से पत्रिका के सदस्य बनने वालों को यह सूचित किया जाता है कि रसीद कटवाने के बाद दूसरे महीने ही में पत्रिका भेजी जायेगी। 6- किसी भी तरह की शिकायत के लिये इस नम्बर पर संपर्क करें। 7. नए और पुराने सदस्यों से अुनरोध है कि नक़द पैसा कोरियर और जनरल डाक से न भेजें। इसलाहे समाज के बारे में किसी भी तरह की शिकायत के लिये 3 बजे से 5 बजे तक फून करें। 011-23273407

प्यारे रसूल हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की प्यारी बातें

❑ हज़रत अबू अय्यूब अंसारी बयान करते हैं कि एक व्यक्ति ने आकर मुहम्मद स०अ०व० से पूछा कि ऐ अल्लाह के रसूल मुझे कोई ऐसा काम बता दिजिये, जिसको करने से मैं जन्नत में चला जाऊं। मुहम्मद स०अ०व०ने फरमायाः अल्लाह की इबादत करो, उसके साथ किसी को साझीदार न ठहराओ, नमाज़ काइम करो, जकात दो, और रिश्तेदारों के साथ अच्छा व्यवहार करो। (बुखारी-मस्लिम)

❑ तुम में से जो शख्स कोई बुराई देखे तो उसको अपने हाथ से खत्म करे अगर इसकी ताकत न हो तो जुबान से दूर करने का प्रयास करे, और अगर इसकी भी ताकत न हो तो दिल में इसको बुरा जाने और यह ईमान की सबसे कमज़ोर अलामत है। (मुस्लिम)

❑ मजलूम की बददुआ से बचो इसलिये कि इसके और अल्लाह के बीच कोई पर्दा नहीं। (बुखारी)

❑ अगर किसी ने अपने भाई को अपमानित (रूस्वा) किया है, उसके माल व दौलत या किसी और चीज़ से कुछ लिया है या किसी के साथ कोई जुल्म किया है तो दुनिया ही में उसको मआफ करा ले और उसकी भरपाई कर दे वर्ना क्यामत के दिन जब दीनार व दिहर्म न होंगे ताकि किसी को इनके माध्यम से खुश किया जा सके। जालिम के अच्छे कर्मों को उसके जुल्म के हिसाब से मजलूम के हिस्से में डाल दिये जायेंगे। जब उसका नाम-ए-आमाल नेकियों से खाली हो जायेगा और मजलूम का हक़ बाकी रहेगा तो मजलूम के गुनाह उसके सर पर डाल दिये जायेंगा। (बुखारी)

❑ जुल्म से बचो इसलिये कि जुल्म क्यामत के दिन अंधेरा बन कर आयेगा। (मुस्लिम)

❑ अपने भाई की मदद करो, चाहे वह जालिम हो या मजलूम। आप स०अ०व० से पूछा गया, जालिम की मदद कैसे की जाये। फरमाया कि उसको जुल्म करने से रोकना ही उसकी मदद है। (बुखारी-मुस्लिम)

❑ ऐ अबू ज़र! जब तुम्हारे घर सालन बनाया जाये तो उसमें पानी बढ़ा लिया करो और अपने पड़ोसी का ख्याल रखो। (मुस्लिम ४७५८)

❑ जो व्यक्ति अल्लाह पर और आखिरत के दिन पर ईमान रखता हो वह अपने पड़ोसी को दुख न दे। (बुखारी ०५६७१)

❑ वह व्यक्ति जन्नत में नहीं जा सकता जिस की शरारतों से उसका पड़ोसी सुरक्षित न हो। (मुस्लिम-६६)

❑ एक बार मुहम्मद स०अ०व० ने तीन बार यह वाक्या सुनाया अल्लाह की कसम वह व्यक्ति मोमिन नहीं हो सकता जिसके दुख से उसका पड़ोसी सुरक्षित न हो। (बुखारी-५५५७)

❑ अल्लाह के नजदीक साथियों में सबसे बेहतर साथी वह है जो अपने साथी के हक़ में बेहतर हो और सबसे अच्छा पड़ोसी वह है जो अपने पड़ोसी के हक़ में बेहतर हो। (तिर्मिज़ी-१८६८)

परिणय सूत्र इस्लाम की दृष्टि में

डा० मुक्तदा हसन अज़हरी रह०

मानव समाज को पवित्र आधारों पर स्थापित करने में इस्लाम की भूमिका अतिप्रभावपूर्ण एवं सार्थक है। इसने सभ्यता तथा संस्कृति के नियम में विभिन्न सुधारों द्वारा समाज के निर्माण तथा प्रगति के लिए महत्वपूर्ण आधार एकत्र किया है। इसने विवाह को एक स्वभाविक पवित्र सम्बन्ध घोषित किया है। पति-पत्नी को एक दूसरे के लिये, भलाई, कल्याण, प्रेम एवं सौभाग्य का श्रोत कहा है। इसकी शिक्षाओं से पता चलता है कि पति-पत्नी परिणय सूत्र (शादी के बंधन) में बंधने के पश्चात आपसी सहयोग तथा धर्म पालन द्वारा जीवन के सभी कठिन समस्याओं को हल कर सकते हैं। तथा अपनी लगन एवं परिश्रम से एक शुद्ध तथा पवित्र समाज एवं समुन्नत राष्ट्र के निर्माण में सहयोग दे सकते हैं।

मानव मात्र की उन्नति तथा व्यवहार और चरित्र की दृढ़ता में विवाह के महत्व ही के आधार पर अबिंया तथा रसूलों (ईश दूतों) ने अपनी शिक्षाओं में विवाह का सुझाव दिया है एवं वैराग्य के जीवन को बुरा तथा खतरनाक घोषित किया है। पैगम्बर मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का कथन है कि तुम में से जिसे निकाह (विवाह) की क्षमता हो वह अवश्य विवाह कर ले, क्योंकि इससे निगाह को नीची तथा विशेषांगों को सुरक्षित रखने में सहायता मिलती है।

विवाह के लाभ पर प्रकाश डालते हुए विद्वानों ने लिखा है कि इससे चरित्र में पवित्रता तथा हृदय में महानता आती है, क्योंकि इस प्रकार मनुष्य को एक दूसरे के साथ निर्वाह करने की आदत हो जाती है। सन्तान की देख रेख, मोमिन के हितों की सुरक्षा तथा सगे सम्बन्धियों एवं गरीबों पर खर्च करने और उनके साथ सदव्यवहार करने का अवसर प्राप्त होता है मनुष्य कुकर्म तथा अन्य यौनिक बुराइयों से सुरक्षित रहता है। आपसी सहयोग से दोनों अल्लाह की इबादत (उपासना) तथा उसके आदेशों के अनुपालन में व्यस्त रहते हैं।

परिवार से सम्बन्धित इस्लामी दृष्टिकोण

अन्य जातियों के विपरीत इस्लाम ने पारिवारिक व्यवस्था को अत्याधिक महत्व दिया है तथा इसके लिये स्थायी रूप से नियम बनाये हैं। इस्लाम में यह व्यवस्था पुरूष तथा महिला के आपसी सहयोग का प्रदर्शक, नई पीढ़ी की शुद्ध वातावरण में उन्नति तथा विकास, और इस्लामी शिक्षण एवं प्रशिक्षण के आदेशों की समानता के लिये उचित क्षेत्र है। यही व्यवस्था एक शुद्ध एवं पवित्र समाज के निमार्ण का आधार बनता है। इसमें दोष आ जाने से समाज का विनाश हो जाता है विश्व की जिन कौमों ने इस व्यवस्था के प्रति असावधानी बरती उनका परिणाम हमारे सामने है।

परिवार के इस्लामी व्यवस्था का क्षेत्र जीवन के सभी पहलुओं को घेरे हुए है। इसमें उपासना तथा व्यवहार से सम्बन्धित शरीअत के आदेशों से सीधा सम्पर्क रहता है।

इसलिए इस पर ध्यान देने का अर्थ यह है कि मनुष्य इस्लामी शरीअत से पूर्ण रूपेण समबद्ध है।

इस्लाम ने परिवार के लिए आपसी प्रेम, स्नेह, सहानुभूति सहयोग, बलिदान एवं त्याग को अनिवार्य घोषित किया है। जिस परिवार में यह विशेषतायें होती हैं उसके सदस्य समाज को सही दिशा में ले जाते हैं, तथा ऐसा चरित्र अपनाते हैं जिससे सफलता प्राप्त होती है। परिवार में उच्च धार्मिक व व्यवहारिक आदेशों को बढ़ावा मिलता है तथा बुराइयों को दूर करने में सहायता मिलती है।

इस्लाम ने महिलाओं के चरित्र को परिवार का आधार माना है। उन्हीं के द्वारा परिवार में प्रेम तथा स्नेह उत्पन्न होता है तथा संयम एवं पवित्रता की ओर अग्रसर होता है। परिवार की स्थिति एक संस्था जैसी है, जिसमें विभिन्न व्यक्ति अपनी-अपनी योग्यता तथा पद के अनुसार प्रयास करते तथा प्रगति पाते हैं। इसी संस्था पर मानव सभ्यता का आधार है। अतः इसमें हित तथा योग्यता का भाग जितना भी अधिका होगा सभ्यता एवं संस्कृति उतनी ही दृढ़ तथा लाभकारी होगी।

इस्लामी शरीअत में परिवार को समाज का आधार एवं एक ऐसा प्रशिक्षण केन्द्र माना गया है, जहां से महान तथा योग्य व्यक्ति तैयार होकर निकलते हैं। इसलिये इस व्यवस्था के उददेश्य को निम्नलिखित बातों में सीमित किया जा सकता है।

१. व्यक्ति की योग्यता को स्वभाविक दिशा पर ले जाना तथा विनाशकारी प्रवृति से हटाकर ऐसे रचनात्मक कार्यों में लगाना जिनके द्वारा मनुष्य की सेवा सम्भव हो तथा व्यक्तिगत, समाजिक एवं व्यवहारिक अस्तित्व की सुरक्षा की जा सके।

२. मान-मर्यादा तथा वंश को हर प्रकार के दोषों से बचाया जा सके तथा समाज में अच्छे कार्यों का प्रचलन हो। ३. मानव जाति के स्थायित्व को सुनिश्चित किया जा सके, क्योंकि व्यभिचार तथा अव्यवहारिकता से सभ्यता तथा संस्कृति एवं राजनीति और सम्पन्नता में बिगाड़ के अतिरिक्त कुछ और प्राप्त नहीं होता। ४. परिवार के लोगों में प्रेम, स्नेह का वावारण स्थापित करना ताकि प्रत्येक व्यक्ति को मनोवैज्ञानिक सामाजिक तथा व्यवहारिक सुख शान्ति प्राप्त हो।

५. एक अच्छे तथा पवित्र समाज के लिये कल्याण तथा शुद्धता की जो विशेषतायें अनिवार्य हैं उनकी प्राप्ति का प्रयास होना चाहिए ताकि परिवार, समाज में अपनी उचित भूमिका निभा सके। इन उददेश्यों को ध्यान में रखते हुए हम समझ सकते हैं कि इस्लाम ने मानव समाज के सुधार के लिए पारिवारिक व्यवस्था के सुधार को कितना आवश्यक समझा है तथा यह व्यवस्था किस प्रकार समस्त इस्लामी व्यवस्था से सम्बद्ध है। वर्तमान समय में मुस्लिम परिवारों को जो कठिनाई एवं कष्ट है उससे मुक्ति का केवल एक मार्ग है कि परिवार में एकेश्वरवाद का प्रचार किया जाये तथा शरीअत के सभी नियमों, आदेशों का पाबन्द बनाया जाये तथा उसमें इस भावना को जीवित किया जाये कि प्रत्येक व्यक्ति के लिए अधिकारों के साथ-साथ कुछ कर्तव्य भी निश्चित हैं, जिनके पालन के बिना जीवन का वास्तविक सुख प्राप्त हो नहीं सकता और न ही समाज में सुख शान्ति तथा पवित्रता एवं शुद्धता को बढ़ावा मिल सकता है। (तौजीहातुल इस्लाम पृष्ठ २६-७७)

प्रेस रिलीज

मर्कज़ी जमीअत अहले हदीस हिन्द की कार्य समिति के सत्र में आतंकवाद की निन्दा

नई दिल्लीः १६ जून २०२२

मर्कज़ी जमीअत अहले हदीस हिन्द की कार्य समिति का एक महत्वपूर्ण सत्र मर्कजी जमीअत अहले हदीस हिन्द के अध्यक्ष मौलाना असगर अली इमाम महदी सलफी की अध्यक्षता में अहले हदीस कम्पलैक्स ओखला नई दिल्ली में आयोजित हुआ जिस में देश के विभिन्न राज्यों से कार्य समिति के प्रतिष्ठित सदस्यों और विशेष आमंत्रित सदस्यों ने प्रतिभाग लिया। इस अवसर पर जमीअत के अध्यक्ष ने संबोधित करते हुए कहा कि एकेश्वरवाद की आस्था पूरी मानवता को हमदर्दी, अम्न व शान्ति, आपसी सहयोग, भाईचारा और सफलता की जमानत देती है। उन्होंने अपने संबोधन में कहा कि मौजूदा हालात में हमें पैगम्बर मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के आदर्श को अपनाने और अपने चरित्र एवं व्यवहार से इस्लाम का सहीह आदर्श पेश करने की ज़रूरत है। उन्होंने सब्र व संयम, स्थिरता और हिकमत व बुद्धिमत्ता से काम लेने और अल्लाह के आदेशों पर अमल करने का उपदेश देते हुए कहा कि इस्लाम के आदेशों पर अमल करना हमारी जिन्दगी का असल मकसद है हमें इससे गाफिल नहीं होना चाहिए। इसके बाद मर्कज़ी जमीअत अहले हदीस हिन्द के महा सचिव मौलाना मुहम्मद हारून सनाबिली ने मर्कज़ी जमीअत की कारकरदगी रिपोर्ट पेश की जबकि मर्कज़ी जमीअत के कोषाध्यक्ष हाजी वकील परवेज ने मालियात विभाग की रिपोर्ट पेश की जिस पर कार्य समिति के प्रतिष्ठित सदस्यों ने संतुष्टि व्यक्त की। मर्कज़ी जमीअत अहले हदीस में सुलह के हवाले से मुंबई से जो किताब प्रकाशित की गई है उसमें की गई ख्यानत, बददियानती और स्वयं को व्यक्त करने का प्रदर्शन निन्दनीय है। इस सत्र में देश व समुदाय की महत्वपूर्ण समस्याओं और जमाअत के निर्माण व विकास से संबन्धित मामलों पर विचार विनयम हुआ और निम्न करारदाद और प्रस्ताव पेश किये गये।

कार्य समिति की करारदाद में एकेश्वरवाद की आस्था को पूरी मानवता तक पहुंचाने, अपने चरित्र एवं व्यवहार से इस्लाम का सहीह आदर्श पेश करने, पैगम्बर हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की जीवनी की अहमियत व उपयोगिता को उजागर करने, ईशदौत्य के पवित्रता की सुरक्षा और हर धर्म के धार्मिक गुरूओं का सम्मान करने की ज़रूरत पर ज़ोर दिया गया है।

इसके अलावा मुस्लिम संगठनों, संस्थाओं के पदधारियों और ओलमा से एक दूसरे के खिलाफ बयान बाजी से बचने और किसी समुदायिक और राष्ट्रीय मसले पर एकमत बनाने की अपील की गई है।

कार्य समिति की क़रारदाद में कहा गया है कि सब्र मोमिन की ताक़त है और मुसलमानों को मौजूदा हालात में सब्र व संयम का प्रदर्शन करते हुए हिकमत व बुद्धिमत्ता अपनाने और गैर कानूनी कार्य शैली से बचने का उपदेश दिया गया है। इसी प्रकार देश में आपसी भाईचारा,

राष्ट्रीय एकता की स्थापना की ज़रूरत पर ज़ोर दिया गया और मीडिया से अफवाह और संसनी फैलाने वाले वाक़आत को कवरेज न देने की अपील की गई है।

क़रारदाद में पैगम्बर मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की शान में दुष्टता करने वाले राजनीतिक नेताओं की निन्दा की गई और इस तरह के बयानात से बचने की तलक़ीन की गई साथ ही इनके खिलाफ कार्रवाई को प्रशंसा की निगाह से देखते हुए उनके खिलाफ अधिकृत कार्रवाई की पुरजोर मांग की गई। इसके अलावा देश के विभिन्न भागों में ढहाने की कार्रवाई और गिरफतारी के अन्दाज और कार्य शैली पर चिंता व्यक्त की गई और गैर कानूनी निमार्ण का हतोत्साहन और देश व विदेश में होने वाले आतंकी वाक़आत की निन्दा और फलस्तीन में इस्राईल की जालिमाना कार्रवाई पर रोक लगाने और क्षात्रों की मांगों पर गंभीरता से गौर करने और क्षात्रों एवं नौजवानों से शान्त रहने और तखरीबी कार्रवाई से बचते हुए अपनी मांगों को रखने की अपील और मर्कज़ी जमीअत अहले हदीस हिन्द के द्वारा आयोजित १६ वें आल इंडिया हिफ्ज व तजवीद व तफसीर कुरआन करीम प्रतियोगिता के आयोजन की प्रशंसा की गई है। कार्य समिति की करारदाद में कहा गया है कि संसार के विभिन्न भागों में जो युद्ध हो रहे हैं और टकराव के जो हालात पैदा हो रहे हैं वह किसी भी समस्या का समाधान नहीं है अतः कोई भी विवाद दोनों पक्षों को वार्ता के माध्यम से हल करने का प्रयास करना चाहिए। करारदाद में देश, समुदाय और जमाअत व जमीअत की अहम हस्तियों के निध न पर गहरे रंज व गम का इज़हार, उनके लिये मग्फिरत की दुआ और शोक संतप्त पविार से शोक व्यक्त किया गया है।

क़रारदाद का मतन (मूल लेख) यह है:

मर्कज़ी जमीअत अहले हदीस की कार्य समिति का यह सत्र तौहीद की आस्था से संबन्धित इस्लामी शिक्षाओं और उसकी खूबियों को पूरी मानवता तक पहुंचाने, मुसलमानों को स्वयं इस्लाम की शिक्षाओं का व्यवहारिक आदर्श बनने, अपने चरित्र व आचारण से इस्लाम का सहीह आदर्श पेश करने, इस्लाम से संबन्धि ात फैलाई जा रही भ्रांतियों के निवारण और पैगम्बर मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की पवित्र जीवनी की उपयोगिता को उजागर और साधारण करने की ज़रूरत पर ज़ोर देता है।

कार्य समिति के इस सत्र का मानना है कि असुरक्षा का एहसास, बेरोजगारी, आवश्यक खाद्य पदार्थों की कीमतों में बेतहाशा बढ़ोतरी और अफवाह व संसनी फैलाना, मानवता का असम्मान और सांप्रदायिकता इस देश की संगीन समस्याएं हैं इन पर काबू पाये बिना देश की समृद्धि और निमार्ण एवं विकास संभव नहीं है। यह सत्र सभी देशबन्धुओं, राजनीतिक दलों और सरकारों से अपील करता है कि वह उपर्युक्त समस्याओं के समाधान के लिये ठोस क़दम उठायें और चुनाव में किसी की जाति, धार्मिक मामलात को मुददा न बना कर विकास कार्यों को अपना चुनावी मुददा बनायें।

कार्य समिति का यह सत्र आपसी भाईचारा, राष्ट्रीय एकता, आपसी सहयोग की ज़रूरत पर ज़ोर देता है। इस देश के निमार्ण व विकास में राष्ट्रीय एकता, मिलनसारी और भाईचारा ने महत्वपूर्ण रोल अदा किया है और यही हमारी पहचान रही है लेकिन अफसोस कि अपरिणामदर्शी लोगों के गलत और निराधार बयानों से हमारी यह पहचान प्रभावित होती जा रही है। इसलिये

कार्य समिति का यह सत्र इलेक्ट्रानिक और प्रिंट मीडिया के पदधारियों और स्वामियों से अपील करता है कि वह ऐसे बयानात को कवरेज न दें जो हमारी गंगा जमुनी सभ्यता को प्रभावित करते हों और उन बयानात और वाक़ाअत को कवरेज दें जो देश हित में हों ताकि जनता का इस पर विश्वास बाक़ी रहे। यह मीडिया की नैतिक, कानूनी और पत्रकारिता की जिम्मेदारियों में से हैं।

कार्य समिति का यह सत्र देश के विभिन्न राज्यों में ढहाने की कार्रवाई की कार्यशैली और गिरफ्तारी के अन्दाज़ पर गहरी चिंता व्यक्त करता है। इसका मानना है कि गैर कानूनी निर्माण निसन्देह गलत हैं और इस का हतोत्साहन होना चाहिये लेकिन निमार्ण कार्य के वक़्त सरकारी कर्मचारी निजी हित के लिये जो उपेक्षा करते हैं वह भी गलत है उनके ख़िलाफ़ भी कार्रवाई होनी चाहिए ताकि पूरी तरह से इसकी रोकथाम हो सके। इसके अतिरिक्त गैर कानूनी निमार्ण को ढहाने की कार्रवाई को न्यायिक कार्रवाई से गुज़ारना न्यायपालिका और प्रशासिका दोनों पर जनता के विश्वास को मजबूती प्रदान करेगा और नागरिकों का अनुचित नुकसान भी नहीं होगा।

कार्य समिति के इस सत्र का इस बात पर ईमान व यकीन है कि सब्र मोमिन की ताक़त है फितना और आज़माइश के जमाने में हमें सब्र व संयम का दामन नहीं छोड़ना चाहिए। ऐसे अवसर पर हिक्मत व बुद्धिमत्ता का प्रदर्शन करते हुए हालात को समझना और उसको सहीह दिशा में ले जाने का प्रयास करना, इस समय के फितनों (आज़माइशें) से अल्लाह की पनाह व मदद मांगने के साथ संविधान व कानून का भरपूर सहारा लेना चाहिये और असंवैधानिक तरीका अपनाने से हर हाल में बचना चाहिए।

कार्य समिति का यह सत्र देश और विदेशों में होने वाली आतंकी घटनाओं की कड़ी निन्दा करता है और अपने इस दृष्टिकोण को दोहराता है कि आतंकवाद और आतंकवादी का कोई धर्म और मत नहीं होता इसलिये इसको किसी विशेष समुदाय से जोड़ना बिल्कुल गलत है। इससे अन्य लोगों के धर्म और उसके मानने वालों की छवि ख़राब होती है किसी भी असुगम वाक़्या को किसी एक समुदाय से जोड़ने की सोच और रूजहान पर अंकुश लगाने की सख्त ज़रूरत है।

कार्य समिति का यह सत्र मिल्ली संगठनों, दलों, संस्थाओं के पदधारियों और ओलमा-ए-किराम से अपील करता है कि वह एक दूसरे के खिलाफ बयान बाज़ी से परहेज और मसलक के मतभेद से ऊपर उठ कर एकता का प्रदर्शन करें। हालात के अनुसार किसी भी मामले में व्यक्तगत राह अपनाने से बचा जाए और महत्वपूर्ण मसलों में सामूहिक राय बनाने की कोशिश की जाये यही कौम व मिल्लत और देश हित में है।

आधुनिक युग में शिक्षा की महत्ता से इन्कार नहीं किया जा सकता, वक़्त और हालात के मददे नज़र ऐसे स्कूलों, कालेजों की स्थापना की सख्त ज़रूरत है जहाँ पर आधुनिक ज्ञान के साथ शरई ज्ञान का भी प्रबन्ध हो ताकि हमारी नई नस्ल अपनी धार्मिक पहचान को बाक़ी रख सके। अतः कार्य समिति का यह सत्र देश व समुदाय और जमाअत के मालदार और समृद्ध लोगों से अपील करता है कि वह ऐसे स्टैण्डर्ड स्कूलों की स्थापना को सुनिश्चित बनाएं और आधुनिक व टेक्निकल शिक्षा को बढ़ावा देने के लिये काम करने वालों का ज़्यादा से ज़्यादा सहयोग करें। यह हमारी कौमी ज़रूरत और दीनी व मिल्ली ज़िम्मेदारी

है।

भ्रूण हत्या, शराब नोशी व अन्य मादक पदार्थ, जुवा, स्ट्टा, दहेज और नारी-शोषण और सोशल मीडिया के द्वारा जारी अश्लीलता की विभिन्न सूरतों पर गहरी चिंता व्यक्त करते हुए कार्य समिति का यह सत्र कल्याणकारी व समाजी संस्थाओं और सरकारों से अपील करता है कि वह इन बुराइयों पर काबू पाने के लिये अवाम में जागरूकता पैदा करें ताकि उपर्युक्त ज्वलंत सामजी बुराइयों पर अंकुश लगाया जा सके।

ईशदौत्य के सम्मान की सुरक्षा इस्लाम की बुनियादी शिक्षा है। वह तमाम धर्मों के धर्मगुरूओं के सम्मान का आदेश देता है। उसकी नज़र में किसी धर्म के मार्गदर्शकों का अपमान करना और धार्मिक शिक्षा की गलत व्याख्या करना अवैध है। मुसलमान अपने धर्म की इस शिक्षा का कड़ाई से पालन करते हैं लेकिन बाज लोग दूसरों के धार्मिक गुरूओं के अपमान और उनकी धार्मिक शिक्षाओं की गलत व्याख्या करके धार्मिक भावनाओं को आहत कर रहे हैं। यह बात अभिव्यक्ति की आज़ादी के सिद्धांतों और धार्मिक शिक्षाओं के सरासर विपरीत है अतः कार्य समिति का यह सत्र एक दूसरे के दीन धर्म का अपमान करने वालों की निन्दा करते हुए सरकार से उनके खिलाफ कड़ी कानूनी कार्रवाई की अपील करता है।

कार्य समिति का यह सत्र विगत दिनों भारत के महान राजनीतिक दल भारतीय जनता पार्टी की राष्ट्रीय प्रवक्ता और दिल्ली प्रदेश बीजेपी के मीडिया प्रभारी की पैगम्बर मुहम्मद मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की पवित्र शान में शर्मनाक और अनुचित टिप्पणी की निन्दा करता है और इसका एहसास है कि उनका पार्टी से निस्कासन संतुष्टजनक है मगर चूंकि इससे अरबों लोगों की भावनाएं आहत हुई हैं इसलिये सरकार के जरिये और ज़्यादा कार्रवाई की ज़रूरत है ताकि भविष्य में कोई भी किसी भी शख्सियत विशेष रूप से धार्मिक हस्तियों के सिलसिले में इस प्रकार की जुरअत न कर सके। इसके अलावा तमाम धर्मों के धर्म गुरूओं से अपील करता है कि वह इस प्रकार की निन्दित हरकात की रोकथाम के लिये सरजोड़ कर बैठें और कोई सर्वसम्मत कार्यविधि तैयार करें ताकि भविष्य में इस तरह की स्थिति न पेश आए।

कार्य समिति के इस सत्र का एहसास है कि फौज में नौजवानों की भर्ती के लिये सरकार की अग्निपथ योजना से नौजवानों का अपना भविष्य असुरक्षित और असंतुष्टजनक नज़र आ रहा है जिस की वजह से देश स्तर पर प्रदर्शन हो रहे हैं और संपत्ति को नुकसान पहुंचाया जा रहा है अतः सरकार को अभ्यार्थियों की मांगों पर गंभीरता से गौर करना चाहिए और प्रदर्शनकारियों को भी चाहिए कि अपनी मांगें शान्तिपूर्ण तरीक़े से हुकूमत के सामने पेश करें और हिंसा से बचें।

कार्य समिति का यह सत्र १६वें आल इंडिया हिफ्ज व तजवीद व तफसीर कुरआन करीम प्रतियोगिता के सफल आयोजन को वक़्त की अहम ज़रूरत क़रार देता है और इसको प्रशंसनीय करार देता है। साथ ही मर्कज़ी जमीअत अहले हदीस हिन्द को इसके सफल आयोजन पर बधाई देता है।

कार्य समिति के इस सत्र का मानना है कि दुनिया के विभिन्न हिस्सों में जो जंगें हो रही हैं और टकराव के हालात पैदा किये जा रहे हैं वह किसी भी समस्या का समाधान नहीं है अतः दोनों पक्षों को किसी भी विवाद को वार्ता के माध्यम

से हल करने का प्रयास करना चाहिए। विदेश मामलात में मर्कज़ी जमीअत अहले हदीस हिन्द का वही दृष्टिकोण होगा जो भारत सरकार का होगा।

कार्य समिति का यह सत्र फलस्तीन के अवाम पर सहयूनी अत्याचार और उनकी जमीन पर अतिक्रमण की भरपूर निन्दा करता है और राष्ट्र जगत से अपील करता है कि वह फलस्तीनियों पर हो रहे अत्याचार पर रोक और उनके अधिकारों की बहाली के लिये ठोस इक़दामात करें। जालिमाना कार्रवाइयों पर इस तरह उपेक्षा मानवता के लिये शर्मनाक और मानवीय अधिकारों की खुली खिलाफवर्जी (उल्लंघन) क़रार देता है। दुनिया में जहां कहीं भी मुसलमानों और इन्सानों पर अत्याचार हो रहे हैं उन पर रोक लगाने की अपील करता है।

मर्कज़ी जमीअत अहले हदीस हिन्द की कार्य समिति का यह सत्र जमाअत व जमीअत और मुल्क व मिल्लत की महत्वपूर्ण हस्तियों के निधन पर गहरे रंज व गम का इज़हार और दुआ करता है कि अल्लाह उनकी मग्फिरत फरमाये, संबन्धितों को सब्र दे और जमाअत व जमीअत को उनका अच्छा विकल्प दे। आमीन

(शेष पृष्ठ... का)

७. जाबिर बिन अब्दुल्लाह रज़ियल्लाहो तआला अन्हो का बयान है कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमायाः

''हर शख्स को उसकी कब्र से उसकी मौत के अनुसार उठाया जाएगा। मोमिन को उसके ईमान व अमल और अच्छे परिणाम के अनुसार और मुनाफिक को उसके निफाक़ (कपटाचार) और बुरे परिणाम के अनुसार (तफसीर इब्ने कसीर ४/४१६, सहीह मुस्लिम २८७८)

कुरआन और हदीस की यह कुछ दलीलें हैं जो बरज़ख की ज़िन्दगी और कब्र की स्थिति का पता देते हैं। हदीस की किताबों में इस सिलसिले में अनेकों हदीसे मौजूद हैं। यह कुछ दलीलें एक सहीह अक़ीदा रखने वाले मोमिन को अपने ईमान व अकीदा की दुरूस्तगी और मजबूती के लिये काफी हैं। कुरआन व हदीस से साबित इन मसाइल के बारे में जो लोग संदेह करते और अक़ल की कसौटी पर परखने की कोशिश करते या बिल्कुल इन्कार करते है तो ऐसे लोग स्पष्ट रूप से गुमराही में हैं अल्लाह तआला ऐसे लोगों को सत्य मार्ग की क्षमता दे।

(शेष पृष्ठ... का)

जिन्दा हो जाते हैं जो मर जाते हैं हक़ के नाम पर

अल्लाह अल्लाह मौत को किसने मसीहा कर दिया

शौकते मगरूर का किस शख्स ने तोड़ा तिलिस्म

मुनहदिम किस ने इलाही कैसरो किसरा कर दिया

सात पर्दों में छिपा बैठा था हुस्ने कायनात

अब किसी ने इसको आलम में आश्कारा कर दिया

आदमियत का गर्ज़ सामान मुहैया कर दिया

इक अरब ने आदमी का बोल बाला कर दिया

इसी तरह सिख धर्म के प्रवर्तक बाबा गुरूनानक जी ने अपनी कविता में आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की प्रशंसा की है।

उपर्युक्त में जिन हस्तियों के कथनों का उल्लेख किया गया है वह अपने समय की अत्यंत महान हस्तियाँ थीं और बाज़ तो ऐसे हैं कि जिन्होंने इतिहास के दिशा और धारे को मोड़ दिया और दुनिया अब भी उनके नाम को आदर सम्मान से लेती है लेकिन उन्होंने भी पैगम्बर मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की प्रशंसा और सराहना की।

प्रेस रिलीज

उदयपुर में हुई निर्मम हत्या दुखदायक और निन्दनीय

दिल्ली, २६ जून २०२२

मर्कज़ी जमीअत अहले हदीस हिन्द के अध्यक्ष मौलाना असगर अली इमाम महदी सलफी ने समाचार पत्रों के नाम जारी एक बयान में उदय पुर में हुई निर्मम हत्या की कड़े शब्दों में निन्दा की है और इसे अत्यंत अफसोसनाक और दुर्भाग्यपूर्ण कृत्य करार दिया है। उन्होंने कहा कि यह वाक़्आ जिस परिप्रेक्ष्य में भी अंजाम दिया गया हो, इसे सही नहीं क़रार दिया जा सकता क्योंकि किसी भी अपराधी को उसके अपराध की सज़ा देने की ज़िम्मेदारी न्यायपालिका और प्रशासन की है और कैसी भी स्थिति हो, किसी को भी क़ानून को अपने हाथ में लेने का अधिकार नहीं है। अध्यक्ष महोदय ने कहा पैग़म्बर हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का पूरा जीवन यह मामूल रहा है कि आप ने सख़्त से सख़्त दुश्मन को भी अपने उच्च आचरण व व्यवहार के माध्यम से अपना मोहित बनाया और कभी भी किसी के साथ ज़ोर ज़बरदस्ती नहीं की या उसके अभद्रता या दुख पहुंचने के सबब सज़ा नहीं दी जिसके आधार पर आप पूरी मानवता के लिये उच्च नैतिकता का आदर्श एवं आइडियल बन गये। प्रेस रिलीज में साधारण एवं असाधारण से अपने ज़जबात को नियंत्रित रखने, किसी भी प्रकार की उत्तेजना से बचने और अम्न व क़ानून की स्थिति बनाये रखने की अपील की गई है और सरकार से मांग की गई है कि वह दोषियों के खिलाफ कड़ी से कड़ी कार्रवाई करके अम्न व कानून के वर्चस्व को सुनिश्चित बनाये और नागरिकों के जान व माल की सुरक्षा के लिये ठोस कदम उठाये।

जारी कर्ता
मर्कज़ी जमीअत अहले
हदीस हिन्द
(जरीदा तर्जुमान १६-३१
जुलाई २०२२)

(प्रेस रिलीज़)

जुलहिज्जा १४४३ का चाँद नज़र आ गया

दिल्ली, ३० जून २०२२

मर्कज़ी जमीअत अहले हदीस हिन्द की ''मर्कज़ी अहले हदीस रूयते हिलाल कमेटी दिल्ली'' से जारी अखबारी बयान के अनुसार दिनांक २६ जुलकादा १४४३ हिजरी अर्थात ३० जून २०२२ जुमेरात को मग्रिब की नमाज़ के बाद अहले हदीस कम्पलैक्स ओखला नई दिल्ली में ''मर्कज़ी अहले हदीस रूयते हिलाल कमेटी दिल्ली'' की एक महत्वपूर्ण मीटिंग हुई और जुलहिज्जा के चांद को देखने के सिलसिले में यथापूर्व देश के अधिकांश राज्यों की जमाअती इकाइयों के पदधारियों और समुदायिक संगठनों से फून के माध्यम से संपर्क किये गये जिसमें विभिन्न राज्यों से चांद को देखने की प्रमाणित खबर मिली। इस लिये यह फैसला किया गया कि दिनाँक १ जुलाई २०२२ जुमा के दिन जुल हिज्जा की पहली तारीख होगी और १० जुलाई २०२२ को ईदुल अज़हा मनाई जाएगी।

मानव अधिकार इस्लाम की शिक्षाओं की रोशनी में

डा० मुहम्मद तैयब शम्स

किसी भी कौम में मानव अधिकार की हैसियत रीढ़ की हड्डी जैसी होती है जिस कौम में मानव अधिकार का पास और ख्याल नहीं रखा जाता तो वह कौम अत्याचार, हिंसा, पथभ्रष्टता, अनारकी और असमाजिक तत्वों का अशिकार होकर रह जाती है जिसके कारण, लूट खिसोट, कत्ल, डाका, जुवा बाजी, शराबनोशी, नारियों पर अत्याचार आदि अपराध ा साधारण होने लगते हैं।

इस्लाम में मानवीय अधिकार की सुरक्षा पर काफी बल दिया गया है मानवअधिकार को वरियता प्राप्त है। बड़े से बड़ा पाप अल्लाह तआला तो बख्श सकता है लेकिन बन्दे के मामूली अधिकार के बारे में बहुत सख्त है इस एतबार से इन्सान चाहे वह किसी भी रंग व नस्ल का हो, किसी कबीले और कौम का हो, स्वामी हो या गुलाम, राजा हो या प्रजा, बहुमत में हो या अल्पसंख्यक में, मर्द हो या औरत, बेटा हो या बेटी, मुस्लिम हो या गैर मुस्लिम भाई इन्सान होने के कारण सब का अधिकार समान हैं।

इन्सान की जान की सुरक्षाः

इस्लाम में इन्सान के जान, माल की सुरक्षा पर काफी बल दिया गया है क्योंकि इन्सान चाहे किसी भी रंग व नस्ल कबीले और देश का वासी हो उसकी जान, और इज्ज़त सुरक्षित हैं इस्लाम एक इन्सान की हत्या को पूरी मानवता की हत्या के समान करार देता है और मानव अधिकार के हनन को पसन्द नहीं करता है और हर हालत में मानव अधि ाकार, इन्सान की जान की सुरक्षा और पासदारी की गारन्टी देता है। कुरआन में अल्लाह तआला फरमाता है।

''जो शख्स किसी को बगैर इसके कि वह किसी का कातिल हो या जमीन में फ़साद मचाने वाला हो, कत्ल कर डाले तो गोया उसने तमाम लोगों को कत्ल कर दिया और जो शख्स किसी एक की जान बचा ले उसने गोया तमाम लोगों को जिन्दा कर दिया''। (सूरे माइदा-३२)

शिक्षा एवं प्रशिक्षण के अधिकार

इस्लाम में शिक्षा प्राप्त करने पर काफी बल दिया गया है ईश्दूत हज़रत मुहम्मद स०अ०व० पर प्रथम वह्य (प्रकाशना) सूरे अलक अवतरित हुयी जिसमें पढ़ने का आदेश है। इस्लाम में हर इन्सान को शिक्षा प्राप्त करने का समान अधिकार है। इसमें बड़े, छोटे, काले गोरे मर्द, औरत में किसी भी प्रकार का कोई भेद भाव और किसी प्रकार की कोई रूकावट नहीं है। कुरआन में अल्लाह तआला फरमाता है ''बताओ तो जो ज्ञान रखते हैं और जो लोग ज्ञान नहीं रखते सब बराबर हो सकते हैं नसीहत तो केवल अकलमन्द ही लोग कुबूल करते

हैं। '' (सूरे जुमर-६)

इस्लाम में नारी-अधिकार

इस्लाम हर व्यक्ति चाहे वह मर्द हो या औरत उसकी इज्जत और प्रतिष्ठा की गारन्टी देता है। ईश्दूत हज़रत मुहम्मद स०अ०व० के ईश्दूत बनाये जाने से पहले समाज में औरतों का सम्मान नहीं था बेटी की हैसियत से कब्र में ज़िन्दा दफन कर दी जाती थी और बहैसियत बीवी जुवा में हारी जाती थी, औरतों पर पर अश्लील कविताएं पढ़ते थे। हज़रत मुहम्मद को ईश्दूत बनाये जाने के बाद इसालम ने औरतों को बाबर्कत और संसार की कीमती हस्ती करार दिया, उनके लिये जीवन के हर विभाग में अधिकार तय किये गये और उनको दुख पहुंचाने का समाज के लिये खराबी बयान किया है। कुरआन में अल्लाह तआला फरमाता है।

''और जो लोग मोमिन मर्दों और मोमिन औरतों को दुख पहुंचाएं जबकि उन्होंने कोई अपराध न किया हो तो निसन्देह उन लोगों ने बोहतान (झूठा आरोप) और खुले पाप का बोझ उठाया (सूरे अहजाब-५८)

ईश्दूत हज़रत मुहम्मद स०अ०व० की वाणी है जो नारी अधिकार के बारे में है। हजरत मुआविया बिन हीदा रजिअल्लाहो तआला अन्हो बयान करते हैं कि मैंने ईश्दूत हज़रत मुहम्मद स०अ०व० से पूछा हम में से किसी की बीवी का उस पर (अपने पति पर) क्या अधिकार है तो ईश्दूत हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया जब तू खाये तो उसे खिलाये जब तू लिाबास (कपड़ा) पहने तो उसे भी पहनाये (अर्थात उसके लिये भी कपड़े तैयार करवाये) और उसके चेहरे पर मत मार न उसे बुरा भला या बदसूरत कहे।

माता पिता के अधिकार

मां बाप अपने बच्चों का लाड प्यार से लालन पालन करते हैं, बच्चे की शिक्षा दीक्षा करके बड़ा करते हैं और रोजी रोटी हासिल करने के लिये सामान का प्रबन्ध करते हैं इसी तरह बच्चों पर अनिवार्य है कि अपने मां बाप के साथ अच्छा व्यवहार करें, बुढ़ापे में उल्टा सीधा वक्या बोल दें तो उनको उफ तक न कहें और अपने कर्तव्य को भली भांति पूरा करें। कुरआन में अल्लाह तआला फरमाता है।

''और हम ने इन्सान को अपने मां बाप के साथ अच्छा व्यवहार करने की नसीहत की है'' (सूरे अंकबूत-८)

हज़रत अबू हुरैरह बयान करते हैं कि ईश्दूत हज़रत मुहम्मद स०अ०व० ने फरमाया उस शख्स की नाक खाक आलूद (धूल धूसरित) हो उस शख्स की नाक धूल धूसरित हो उस शख्स की नाक धूल धूसरित हो जिसने बुढ़ापे में अपने मां बाप को पाया उनमें से एक को या दोनों को और फिर (भी उनकी सेवा) करके स्वर्ग में नहीं गया। (बुखारी, मुस्लिम)

रिश्तेदारों के अधिकार

रिश्तेदारों से बेहतर बर्ताव एवं व्यवहार करके ही एक बेहतरीन समाज को वजूद (स्तित्व) में लाया जा सकता है। रिश्तेदारों के साथ प्रेम की भावना होनी चाहिये न कि तनाव और दुश्मनी का, एक बेहतर इन्सान के लिये जरूरी है कि अगर उनके रिश्तेदार रिश्ता

नाता न जोड़ें तब भी उनके साथ गलत व्यवहार न करें क्योंकि इस्लाम में दुर्व्यवहार और मानव अधिकार के हनन की कोई गुजाइश नहीं है हर हाल और हर सूरत में मआफ करने सब्र और शुक्रगुज़ारी का जजबा रखना एक अच्छे इन्सान की पहचान है। कुरआन और हदीस से यह साबित है कि रिश्तेदारों से अच्छा व्यवहार हर हाल में वाजिब है। कुरआन में अल्लाह तआला फरमाता है: ''बेशक अल्लाह तआला रिश्तेदारों के साथ अद्ल व एहसान (न्याय एवं भलाई) करने का हुक्म देता है और बेहयाई के कामों, असभ्य हरकतों और जुल्म व ज्यादती से रोकता है वह स्वयं तुम्हें नसीहतें कर रहा है कि तुम नसीहत हासिल करो''। (सूरे नह्ल-९०)

हज़रत अनस रजिअल्लाहो तआला अन्हो बयान करते हैं कि ईश्दूत हज़रत मुहम्मद स०अ०व० ने फरमाया जिस शख्स को यह बात पसन्द है कि उसकी रोज़ी में बढ़ोतरी हो और उसकी उम्र में ताखीर (इज़ाफ़ा) किया जाये तो उसे चाहिये कि वह रिश्तेनाते को जोड़े रखे।

जानवरों, पक्षियों, पेड़ पौदों के अधिकार

इस्लाम में तमाम जानदार और निर्जीव (गैरजानदार) के अधिकार को निर्धारित किया गया है अकारण पेड़ पौधों और निर्जीव को काटने की सख़्त मनाही है। तमाम चौपाये और गैर चौपायों के साथ अच्छा बर्ताव करने का हुक्म दिया गया है। इन्सान के अलावा संसार में जितनी सृष्टि हैं वह सब इन्सान ही के लिये अल्लाह का इंआम और एहसान हैं। इन नेमतों पर अल्लाह की शुक्रगुज़ारी करनी चाहिये और इन सबके अधिकार को भी अदा करना चाहिये ताकि समाज और दुनिया की रोनक और मध्यमार्ग बाकी रहे। हज़रत अबू हुरैरह रजिअल्लाहो तआला अन्हो बयान करते हैं कि हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमायाः एक शख्स रास्ते पर जा रहा था कि उसे सख्त प्यास महसूस हुयी, वह एक कुवें में उतर कर पानी पी कर बाहर आ गया (बाहर आ कर) उसने एक कुत्ते को देखा जिस की जीभ अत्यंत प्यास की वजह से बाहर निकल रही थी, वह सख्त प्यास की वजह से जमीन की गीली मिटटी को चाट रहा था तो इस शख्स ने सोचा कि जिस तरह मुझे सख़्त प्यास लगी थी उसी तरह कुत्ते को भी सख़्त प्यास लगी है, वह शख्स फिर कुवें में उतर कर अपने जुराब में पानी भर कर कुत्ते को पिलाया, अल्लाह इस शख्स के कर्म से इतना खुश हुआ कि उसको बख्श दिया। सहाब-ए-किराम ने अल्लाह के सन्देष्टा हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से पूछा हमारे लिये जानवरों के साथ भलाई करने में भी सवाब है। तो आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया जिस का जिगर नर्म और रसीला (जानदार) है उसमें सवाब है। (सहीह बुखारी-५६६३ सहीह मुस्लिम २२४४)

हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का फरमान है कि एक औरत बिल्ली की वजह से जहन्नम में चली गयी, बिल्ली को औरत ने बांध रखा था न उसे कुछ खिलाती थी और न उसे खोलती थी ताकि वह जमीन के कीड़े मकोड़े में से कुछ खा लेती

यहां तक कि औरत की इस लापरवाही की वजह से वह बिल्ली मर गयी। (सहीह मुस्लिम २६१९)

समता और उदारता का अधिकार

इस्लमा में मर्द और औरत, मालिक और गुलाम, अमीर गरीब, रंग व नस्ल, कौम व मजहब के भेद भाव किये बिना सबके अधिकार बराबर हैं चाहे वह इन्सान किसी भी कबीले से हो, अरबी हो या गैर अरबी, गोरा हो या काला सब बराबर का हक रखते हैं, क्योंकि सभी इन्सान आदम की औलाद हैं। और कबाइली गर्व, माल, दौलत सबके सब दुनियावी शान व शौकत हैं। अल्लाह की नजर में सबसे अच्छा इन्सान वह है जो सभी सृष्टि के अधिकारों की सुरक्षा करता हो, जो सबसे ज्यादा परहेजगार हो, शरीफ और अल्लाह से डरने वाला हो। कुरआन में अल्लाह तआला फरमाता है ''तमाम मुसलमान आपस में भाई भाई हैं''। सूरे हुजूरात-१०)

हज़रत अबू हुरैरह रजिअल्लाहो तआला अन्हो बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल (सन्देशवाहक) हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमायाः तुम एक दूसरे से डाह और हसद न करो, न क्रय-विक्रय में बोली बढ़ा कर एक दूसरे को धोका दो, न आपस में नफरत रखो, न एक एक दूसरे से बेरूखी करो और न तुम में से कोई एक दूसरे के सौदे पर सौदा करे और ऐ अल्लाह के बन्दो भाई भाई बन जाओ, मुसलमान मुसलमान का भाई है न उसपर अत्याचार करे, न उसको हकीर समझे और न उसको बेसहारा छोड़े। तकवा (अल्लहा से भय) यहां है और हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने अपने सीने की तरफ इशारा करते हुये तीन बार फरमाया ''एक शख्स के बुरा होने के लिये यही काफी है कि वह अपने भाई को हकीर (कमतर, तुच्छ) समझे, हर मुसलमान का खून, उसका माल और उसकी इज्ज़त दूसरे मुसलमान पर हराम है''। (सहीह मुस्लिम)

हज़रत अबू हुरैरह रजिअल्लाहो अन्हो बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल (मैसेन्जर) सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमायाः एक मुसलमान के दूसरे मुसलमान पर पांच हक़ हैं, सलाम का जवाब देना, बीमार की बीमार पुर्सी करना, जनाज़ों के पीछे चलना, दावत कुबूल करना और छींकने वाले की छींक का यरहमोकल्लाह से जवाब देना और सहीह मुस्लिम की रिवायत में यही भी है कि जब वह भलाई तलब करे तो उसके साथ भलाई करो।

इन्सान की हैसियत से हमारा वजूद अल्लाह का एक अनोखा इंआम एवं सम्मान है। इन्सान सभी सृष्टि में श्रेष्ठ है और संसार के हर कण का वजूद इन्सान के लिये है। संसार के सृष्टा की मंशा भी यही है कि संसार के अन्य जीव निर्जीव के साथ इन्सानों के अधिकार का ख्याल रखा जाये ताकि यह चमन हमेशा हरा भरा और तरोताज़ा रहे। सारांश यह है कि मानव अधिकार के बारे में इस्लाम धर्म की शिक्षा बुनियादी तौर पर इन्सान के सम्मान, और समता पर आधारित है।

❑ ❑ ❑